भगवान

समग्र ऐश्वर्य और धर्म

हेदर विलियम्स् द्वारा

‘दर्शन और मनन’ की गोष्ठी

शनिवार, १४ नवम्बर, २०२०

शुभ दीपावली।

और भारत में आप सभी जो नववर्ष मनाने वाले हैं : आपको नूतन वर्षाभिनन्दन। साल मुबारक। भारतीय नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

सिद्धयोग अभ्यास ‘दर्शन और मनन’ की इस सिद्धयोग गोष्ठी की सूत्रधार और वक्ता होना मेरे लिए खुशी की बात है।

मेरा नाम हेदर विलियम्स् है और मैं नन्हे मृदंगवादक, रोहित की माँ हूँ जिसे आपने हाल ही में हुए सीधे वीडिओ प्रसारणों में तबला-वादन करते और अपने मन की बात कहते हुए देखा होगा। यह मेरा सद्भाग्य है कि बाबा मुक्तानन्द ने सन् १९८१ में मेरे माता-पिता का विवाह सम्पन्न कराया और बाबा जी के आशीर्वादों से उन्होंने मुझे सिद्धयोग पथ का महान उपहार दिया है। विश्वभर में आपमें से अनेक लोगों से मिलना और सिद्धयोग की सिखावनियों का अभ्यास आपके साथ करना मेरे लिए अद्भुत रहा है। मैं श्रीगुरुमाई की कृपा के लिए कृतज्ञ हूँ।

मुझे विश्वास है कि आपमें से लगभग हर एक ने यह निश्चय किया होगा कि आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखेंगे और दीपावली-उत्सव के उपलक्ष्य में सिखावनियों की जो दावत वहाँ उपलब्ध है उसे ग्रहण करेंगे; यह उत्सव पूरे सप्ताह से हो रहा है और कल यानी बलिप्रतिपदा पर भी जारी रहेगा जोकि भारत के अनेक भागों में नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। सभी माताएँ जो अपने छोटे बच्चों का लालन-पालन कर रही हैं, उनके लिए सिद्धयोग पथ की वेबसाइट निश्चित ही “श्रीगुरु का वरदान” है।

श्रीगुरु के विषय में कहें तो : श्रीगुरु प्रकाश प्रदान करते हैं। और हम आरती कर श्रीगुरु की पूजा करते हैं; आरती की लौ उस प्रकाश का प्रतीक है जिसे श्रीगुरु ने हमारे अन्दर प्रज्वलित किया है।

दीपावली की एक पारम्परिक कहानी है कि इस समय प्रभु श्रीराम अपने चौदह वर्ष के वनवास के बाद अपने राज्य लौटे थे। मुझे आश्चर्य होता है कि कैसे प्रभु श्रीराम ने अमावस्या की रात को लौटने का निर्णय लिया। प्रभु जी स्वयं प्रकाश के मूर्तरूप थे। और जब वे अपने राज्य लौट रहे थे, तो उनके भक्तों ने मिट्टी के दिये जलाकर उनके पथ को आलोकित किया था ताकि उन्हें पथ दिखाई दे। श्रीगुरु प्रकाश प्रदान करते हैं। प्रभु श्रीराम प्रकाश प्रदान करते हैं। और उनके भक्त प्रकाश से उनकी पूजा करते हैं।

प्रकाश जीवन देता है।

प्रकाश, प्रकाश को सुपुर्द करता है।

प्रकाश, प्रकाश को आलोकित करता है।

प्रकाश, प्रकाश को पूजता है।

प्रकाश हमें मार्ग दिखाता है।

प्रकाश खुशियाँ लाता है।

प्रकाश हमें हमारे अपने गन्तव्य तक ले आता है।

प्रकाश, प्रकाश में विलीन होता है।

इस सप्ताह, मंगलवार की शाम को मैंने रोहित को श्रीगुरुमाई द्वारा लिखित "शुभ दीपावली" की कविता पढ़कर सुनाई; रोहित दिसम्बर माह में तीन साल का होगा। उसने बड़े चाव से और ध्यान से कविता सुनी।

जब हम कविता के अन्त तक पहुँचे तो हमने देखा कि गुरुमाई जी ने सभी पाठकों को एक सुन्दर चाँदी की थाली में दीपावली की बहुत सारी मिठाइयाँ दी हैं। रोहित की आँखें चमक उठीं—उसे हरेक मिठाई खानी थी! तो, मैंने कम्प्यूटर स्क्रीन की ओर हाथ बढ़ाया और एक-एक करके थाली में से मिठाई उठाकर रोहित को खिलाई। उसने हरेक का मज़ा लिया, वह वास्तव में चबा रहा था। फिर वह खुद थाली में से मिठाई उठाकर खाने लगा! वह मेरी गोद में बैठा था और मैं *महसूस* कर पा रही थी कि वह गुरुमाई जी के प्रेम की मिठास में पिघल रहा है। उसने कहा कि नारियल की मिठाई उसे सबसे ज़्यादा पसन्द आई।

मैं आपको यह क़िस्सा इसलिए सुना रही हूँ क्योंकि कविता के अन्त तक आते-आते यदि आपको लगा हो कि थाली थोड़ी ख़ाली है तो आप मेरे नन्हे बेटे को माफ़ कीजिएगा।

गुरुमाई जी ने हमें सिखाया है कि सिद्धयोग पथ पर हर पर्व, हर महोत्सव भगवान की आराधना करने का, सिद्धयोग की सिखावनियों का अध्ययन व अभ्यास करने का और श्रीगुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का सबसे अच्छा कारण है।

आज 'दर्शन और मनन' की इस गोष्ठी का शीर्षक है, संस्कृत शब्द 'भगवान।' यह अनुपम शब्द सिद्धयोग के अनेक नामसंकीर्तनों में आता है, इसलिए आप इससे पहले से ही भलिभाँति परिचित हैं। बल्कि, हम बड़े बाबा को भगवान नित्यानन्द कहकर सम्बोधित करते हैं।

इस वार्ता की तैयारी करने के लिए मैं अमी बन्सल के साथ बात कर रही थी। अमी एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन की स्टाफ़ सदस्या हैं और संस्कृत भाषा की विद्वान हैं। वे और उनका परिवार मुम्बई में रहते हैं और उनकी पाँच वर्षीय बेटी, नित्याश्रिया रोहित की सबसे अच्छी मित्र बन गई है, तबसे जबसे वह और अमी पिछले वर्ष सेवा अर्पित करने श्री मुक्तानन्द आश्रम आए थे।

अमी और मैंने मिलकर 'भगवान' पर आज की व्याख्या तैयार की है। शब्द 'भगवान', 'भग' शब्द से आया है। प्राचीन भारतीय शास्त्र, विष्णुपुराण के एक श्लोक में 'भग' के अर्थ को परिभाषित किया गया है और यह बताया गया है कि शब्द 'भगवान', जिज्ञासुओं के हृदय को इतना प्रिय क्यों है। मैं आपको इस श्लोक का भाषान्तर बताती हूँ।

> समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य—साथ मिलकर ये छः विभूतियाँ या सद्गुण 'भग' शब्द की रचना करते हैं।[१]

इस श्लोक से हम 'भगवान' के दिव्य गुणों के बारे में सीखते हैं। विष्णुपुराण में वर्णित, 'भगवान' के पहले दो गुण हैं, 'समग्र ऐश्वर्य' व 'धर्म।'

अब मैं आपको इन दो दिव्य गुणों के बारे में समझाती हूँ।

समग्र ऐश्वर्य—पूर्ण प्रभुत्व

'समग्र' शब्द का अर्थ है 'सम्पूर्ण' या 'पूरा।' इस श्लोक में 'ऐश्वर्य' का अर्थ है 'आधिपत्य,' 'प्रभुत्व,' 'कल्याणकारी शक्ति।' 'ऐश्वर्य' का तात्पर्य प्रचुरता व सम्पदा से भी है—दोनों, अन्तर की आध्यात्मिक सम्पदा और बाह्य प्रचुरता। अतः 'समग्र ऐश्वर्य' का अर्थ है 'पूर्ण प्रभुत्व।' सिद्धयोग पथ पर हमें 'समग्र ऐश्वर्य' प्राप्त होता है, श्रीगुरु की कृपा प्राप्त होने से जो हमारे अन्दर कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करती है।

शुभ दीपावली के अवसर पर भगवान नित्यानन्द के सान्निध्य में 'दर्शन और मनन' की इस गोष्ठी में भाग लेते हुए अपने हृदय को विस्तृत होने दें। अपने हृदय में उस 'ऐश्वर्य' को—प्रभुत्व की शक्ति को,

भौतिक व आध्यात्मिक प्रचुरता को—पूरी तरह ग्रहण करें जो बड़े बाबा की दिव्य व कृपापूर्ण दृष्टि द्वारा आप पर बरसाई जा रही है।

धर्म

अब मैं आपको 'भगवान' के दूसरे दिव्य गुण के बारे में समझाती हूँ जो है, 'धर्म'। 'धर्म' संस्कृत का अन्य अद्‌भुत शब्द है जो अर्थ की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। इनमें से एक अर्थ है, 'वह जो सब कुछ एक-साथ बाँधे रखता है।' अतः 'धर्म' वह तत्त्व है जो वैश्विक मैत्री व सौहार्द की पुष्टि करता है।

'धर्म' दर्शाता है सत्य को, सदाचार को और उन सभी सद्‌गुणों को जिनका पालन एक सच्चा मानव बनने के लिए किया जाता है। 'धर्म' को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि इस धरती पर सभी में न्याय व समता हो।

'धर्म' का एक अन्य महत्त्वपूर्ण अर्थ है, जीवन में एक व्यक्ति का अपना कर्तव्य। भारत के शास्त्र सिखाते हैं कि जब एक व्यक्ति अपने उस धर्म या कर्तव्य का पालन करता है जो उसके लिए स्वाभाविक है, तब वह अपनी आत्मा को जान सकता है और उसमें विश्रान्ति पा सकता है। भगवान नित्यानन्द जैसे महात्मा ने मानव का सर्वोच्च धर्म पूर्ण किया है, जो है, परमात्मा के साथ, भगवान के साथ एक होना।

दीपावली के अवसर पर, भगवान नित्यानन्द के सान्निध्य में 'दर्शन और मनन' की इस गोष्ठी में आप बड़े बाबा के देदीप्यमान व चैतन्यमय स्वरूप पर अपनी दृष्टि टिकाएँ; उनका स्वरूप धर्म के सत्त्व से जगमगाता है।

***

मुझे दर्शन बहुत प्रिय है।

दर्शन, संस्कृत व हिन्दी भाषा का शब्द है जिसका एक मुख्य अर्थ है, 'देखना या देखा जाना।'

मैं स्वयं को भाग्यशाली महसूस करती हूँ कि गुरुमाई जी ने मुझे यह सिखाया है कि दर्शन हमारे अपने हृदय में होता है। इसी कारण, मैं पहले निर्धारित तरीक़े से दर्शन का अभ्यास करती हूँ—उदाहरण के लिए, मैं अपने पूजा के कमरे में जाती हूँ, जब भी सम्भव हो तब मन्दिर जाती हूँ, पूरी जागरूकता के साथ अपने मानस-पटल पर श्रीगुरु के स्वरूप को देखती हूँ और इस बात के प्रति सजग रहती हूँ कि मैं अपने हृदय में श्रीगुरु की शक्ति से जुड़ी हूँ। इस अनुशासन के कारण, मैं फिर पूरे दिन अपने श्रीगुरु के दर्शन कर पाती हूँ।

'मनन', संस्कृत व हिन्दी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'चिन्तन' या 'गहराई से किया गया विचार।' गुरुमाई जी ने कहा है कि मनन महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह मात्र उन चीज़ों के बारे में सोचते रहना, सोचते रहना और सोचते रहना नहीं है जो हमें पसन्द नहीं हैं, जिनकी हम परवाह नहीं करते, जो हमें परेशान करती हैं, जिन चीज़ों से हम छुटकारा पाना चाहते हैं, आदि-इत्यादि।

वस्तुतः, मनन एक सुन्दर आध्यात्मिक अभ्यास है जो हमें अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने हेतु लगातार प्रयत्नशील रहने के लिए सम्बल प्रदान करता है, चाहे हम अपने मन में कितनी भी मुसीबतों का, दुविधाओं का सामना क्यों न करें। हमारा लक्ष्य है, पावन अभीष्ट को पाना। सिद्धयोग पथ पर यह है, 'आत्मा की प्रशान्ति', इस वर्ष का नववर्ष-सन्देश।

सभी परम्पराओं और संस्कृतियों में, पावन अभीष्ट या उसके जैसा ही कुछ पाने की कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ हमेशा ही व्यक्ति की अपनी अनश्वर आत्मा को पाने के बारे में होती हैं। इन कथाओं के नायक सदियों तक खोज करते हैं—उनकी यात्रा लम्बी और दुष्कर होती है और अगर वे सौभाग्यशाली हों तो उन्हें वह पावन अभीष्ट मिल जाता है।

तथापि सिद्धयोग पथ पर जब हमें श्रीगुरु की कृपा प्राप्त होती है तब हम पहली ही पारी में विजयी हो जाते हैं। श्रीगुरु से प्राप्त एक सिखावनी, श्रीगुरु से प्राप्त ज्ञान का एक शब्द लेज़र किरण की तरह होता है; जब हम उस शब्द पर या उस सिखावनी पर चिन्तन-मनन करते हैं तो वह हमें तेज़ी-से साधना के लक्ष्य की ओर ले जाने के लिए काफ़ी है। फिर हम पथ पर चलते जाते हैं बस उसके आनन्द के लिए, उस पर चलने में आने वाले मज़े के लिए, इसलिए कि हमें उससे प्रेम होता है—इसलिए कि हम उसे पहचानने के नए तरीक़े खोजें जो हमें प्राप्त है।

वह हमारे पास है, इसलिए हम ध्यान करते हैं।

वह हमारे पास है, इसलिए हम नामसंकीर्तन करते हैं।

वह हमारे पास है, इसलिए हम दर्शन का अभ्यास करते हैं।

वह हमारे पास है, इसलिए हम मनन करते हैं।

सिद्धयोगी होने के नाते हम पूर्णता के स्थान से देखते, सोचते और जीते हैं, न कि अभाव के स्थान से। हम देते व ग्रहण करते हैं, अन्तर के उसी प्रचुरता के स्थान से, अपनी विपुलता के विस्तार से। हम देते हैं क्योंकि हमें देने में आनन्द आता है। हम लेते हैं क्योंकि लेने में हमें खुशी मिलती है।

आज की 'दर्शन और मनन' की इस गोष्ठी में, मैं आपको एक बार फिर भगवान नित्यानन्द के दर्शन करने और 'समग्र ऐश्वर्य' व 'धर्म' के विषय पर मनन करने के लिए आमन्त्रित करती हूँ। 'समग्र ऐश्वर्य' पूर्ण प्रभुत्व है। 'धर्म' है सत्य, सदाचार, सद्गुण और कर्तव्य।

इस गोष्ठी में 'दर्शन और मनन' का अभ्यास करते हुए, अपनी महान प्रचुरता में स्थित रहें।

***

प्रतिभागियों ने दर्शन और मनन का अभ्यास किया। तत्पश्चात् सभी ने दीपावली के सम्मान में श्रीमहालक्ष्मीस्तोत्रम् का पाठ किया और बड़े बाबा को नैवेद्य अर्पण करने में भाग लिया।

'दर्शन और मनन' की दूसरी सिद्धयोग गोष्ठी के समापन पर हेदर ने समापन पक्तियाँ कहीं।

अपनी दिनचर्या में इन दो अभ्यासों—दर्शन और मनन, के लिए समय निर्धारित करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूँ। आप अपने लिए यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि आप अपनी साधना के लिए सही कार्य कर रहे हैं और आप अपने मन की मदद कर रहे हैं कि वह शान्तिपूर्ण बना रहे—'आत्मा की प्रशान्ति।'

आज मैंने आपको अन्तरस्थ भगवान के दो अनुपम गुणों के बारे में समझाया। ये गुण हैं, 'समग्र ऐश्वर्य' और 'धर्म'। अपने मन पर और अपने कृत्यों पर आधिपत्य, जीवन में अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए समर्पण और यह सब करते हुए, आत्मा को जानने के स्वधर्म की पूर्ति करने का संकल्प। आने वाले दिनों में दर्शन और मनन का अभ्यास करते रहें और इन गुणों को अपने बोध में बनाए रखें। आप जानते ही हैं, दिव्यता आपके अन्दर वास करती है।

मेरे भारतीय मित्रों ने मुझे बताया है कि दीपावली के सभी उत्सव जीवन से प्रेम करने और साथ मिलकर जीवन का उत्सव मनाने के बारे में हैं। हम जिन दीपों को जलाते हैं, उनकी ज्योतियाँ हमारे हृदय में प्रज्वलित जगमगाते प्रेम की प्रतीक हैं।

शुभ दीपावली।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] विष्णुपुराण, ६.५.७४; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन २०२०।